ढुँढाड़ी भाषा त्रैमासिक पत्रिका

आपणो ढूंढाड़, आपणी भासा

जनवरी सूं मारच-2018

सफलता को मंतर, जल्दी उठो, खूब मेनत करो अर भागवान रअवो। – जे पालू गेट्टी

संपादक

निरमाण सोसाइटी-चाड़सू

लगन की चाबी सूं जीवन का सारा बंद कुंवाड़ खोल सकअ छ। - जॉन डी. लेमें

लाडली बेटी योजना/ सुकन्या समरदी योजना

1. आपणी लाडली छोरी की बचत कअ तोड़ी या एक नई सुकन्या समरदी योजना छ।

2. सुकन्या समरदी योजना का स्याब सूं छोरी का नांव सूं खातो, ऊंका माता-पिता या फेर ऊनअ पाळबाळा का स्याब सूं ऊंकी पअचाण अर पता का परमाण वअ छोरी का जनम परमाण का कागज सूंईं खातो खुलवा सकअ छ।

3. एक माता-पिता या फेर ऊनअ पाळबाळो एक छोरी का नांव सूं एक ई खातो खुलवा सकअ छ, वअ जादा सूं जादा दो छोर्यां का नांव सूं खातो खुलवा सकअ छ।

4. ईं योजना का स्याब सूं खातो छोरी का जनम सूं लेर 10 साल की उमर तक खुलवा सकअ छ।

5. ईं योजना का स्याब सूं कम सूं कम (1000/-) एक हजार रफ्या जमा कराबा सूं खातो खुलअ छ।

6. एक साल मअ कम सूं कम (1000/-) एक हजार रफ्या वअ जादा सूं जादा 1,50,000/- रफ्या की रासी नअ 100/- का गुणक मअ जमा करवा सकअ छ।

7. जमा करबा की कोई बी संख्या कोनअ, जमा कियां बी करा सकअ छ, नगद, चेक या डिमाण्ड डराफ्ट सूं बी करवा सकअ छ।

8. पाछली साल 2015-16 कअ तोड़ी सुकन्या समरदी योजना बेई ब्याज दर 9.2% छ, जे टेम-टेम पअ भारत सरकार सूं घोसित/ निरधारित कर देली।

9. छोरी 18 साल की हअतांईं, ईं योजना का स्याब सूं, जमा रफ्या मअ सूं 50% रफ्या छोरी की चोखी पडाई-लिखाई अर ब्याव कअ तोड़ी नकाळ सकअ छ।

10. सुकन्या समरदी योजना मअ खोलेड़ा खाता नअ, छोरी की उमर 21 साल पूरी हियां पाछअ अर ऊंको ब्याव हअतांईं, ईं खाता नअ बन्द कर सकअ छ।

11. अगर खाता को टेम पूरो हियां पाछअ बी चालू रअ छ तो, खाता मअ जमा रफ्या पअ ईं योजना का स्याब सूं टेम-टेम पअ सरकार का स्याब सूं ब्याज दर मलतो रअलो।

12. ईं खाता नअ पूरा भारत मअ कसी बी दूसरी ठोर पअ लेजा सकअ छ।

13. माननीय वित मन्तरी का बजट भासण 2015-16 का स्याब सूं, ईं खाता मअ जमा करायेड़ी रासी पअ अनुभाग 80 सी कअ अधीन आयकर मअ छूट बी छ।

14. थे सब आज ई आपणअ सांकडअ का डाकघर मअ जाणकारी कर्रर आपणी लाडली छोरी कअ तोड़ी एक सुकन्या खातो जरुर खुलवावो।

ढुंढाड़ी भासा मअ कावतां

1.मरदां को दुवाळो तो, मुसाणा मअ नकळअ छ।

अर्थ- गरीब व्यक्ति की गरीबी में ही मौत हो जाना।

2. मार-मार्रर दअंगड़अ चडावअ वो हअर्या न उडावअ।

अर्थ- ज़बरन से कार्य करवाने पर कार्य की मौलिकता नहीं रहती है।

ढुंढाड़ी भासा मअ मुवावरा

1. ओराई ल्याबो।

अर्थ- बुराई लेकर आना।

वाक्य में प्रयोग :- रामू तो नतकई दनियां की ओराई लेर आवअ छ।

2. ओखळी मअ माथो देबो।

अर्थ- जान बूझकर मुसीबत में फंसना।

वाक्य में प्रयोग :- मनोज तो पुलिसाळा सूं उळजर ओखळी मअ माथो दे दियो।

ढुंढाड़ी भासा मअ भजन

अब तो चेत गवांर

नन्दरा मअ कांईं सूतो रअ, अब तो चेत गवांर।
अब तो चेत गवांर मानवी, अब तो मूरख चेत।
नन्दरा मअ कांईं सूतो रअ, अब तो चेत गवांर॥ (टेर)
पअली सोयो मात गरब मअ, उल्टा पांव पसार।
अरे भीतर से जद बारअ नखळयो, भूल्यो कोल करार।
जन्म थारो होल लियो रे, अब तो चेत गवांर॥
नन्दरा मअ कांईं सूतो रअ, अब तो चेत गवांर.....॥(1)
दूजां सोयो मात गोद मअ, सुख सूं जग मअ आर।
अरे बअण-बुआ थारा लाड-लडावअ, गा रिया मंगळाचार।
लाड थारो हो लियो रे, अब तो चेत गवांर॥
नन्दरा मअ कांईं सूतो रअ, अब तो चेत गवांर.....॥(2)
तीजां सोयो तिरिया सेज पअ, गळ बिच बईंया डाळ।
हअग्यो रोग, भोग का दुखिया, तन कर लियो बेकार
परण थारो हो लियो रअ, अब तो चेत गवांर॥
नन्दरा मअ कांईं सूतो रअ, अब तो चेत गवांर.....॥(3)
चोथां सोयो जा समसाणा लाम्बा पांव पसार।
अरे कहत कबीर, सुणो भाई संतो कांईं न जावअ लार।
मरण थारो हो लियो रे, अब तो चेत गवांर॥
नन्दरा मअ कांईं सूतो रअ, अब तो चेत गवांर.....॥(4)

ढुंढाड़ी भासा मअ पेळयां

1. अरी-अरी थारी कणियां कअरी क्यूंरी।
लाल जमी को घागरो थारो, हर्यो नेफो क्यूंरी॥

उत्तर : लाल मरची

2. भंअस ब्याई माळ मअ जर पटक्याई खेत मअ।
अर बच्यो ल्याई पेट मअ॥

उत्तर: मूफळी

ढुंढाड़ी भासा मअ साख

सतगुरु बादळ परेम का अर घटा चडी घणघोर।
अमरत बून्द बरसण लागी, बीजण लागी ठोर॥
2. हंसा सरवर ना तजे अर जो जळ खारा होय।
नाडा-नाडा डोलता, वांनअ भली न खवअ कोई॥

ढुंढाड़ी भासा मअ काअणी

च्यार चोर

एक बार की बात छ। एक गांव मअ च्यार चोर छा। वअ एक दन एक सेठ कअ चोरी करबा चलग्या। सेठ नअ चोरां को पतो पड़ग्यो। सेठ ऊंका कोठा मअ जार बअठग्यो। सबसूं पअली बडो चोर चोरी करबा बेई कोठा मअ देख्यो। चोर कोठा मअ देख्यो तो सेठ चोर की नाक काट लियो। चोर नाक नअ पकड़र बोल्यो, कोठा मअ तो बास आरी छ। दूसरो चोर कोठा मअ देख्यो तो सेठ ऊंको बी नाक नअ काट लियो। वो बी नाक नअ पकड़र बोल्यो, कोठा मअ तो बास आरी छ। तीसरो चोर कोठा मअ देख्यो तो सेठ ऊंको बी नाक काट लियो। वो बी नाक नअ पकड़र बोल्यो, कोठा मअ तो बास आरी छ। चोथो चोर कोठा मअ देख्यो तो सेठ ऊंको बी नाक नअ काट लियो। वअ च्यारूं बराबर हअग्या। सबसूं छोटो चोर वांनअ बोल्यो थानअ ईं बात को पतो छो तो, थे मन पअली ई बता देता। पाछअ वअ तीनू चोर बोल्या तोनअ पअली बता देता तो, आपां च्यारूं बराबर कियां हअता?

ढुंढाड़ी भासा मअ चुटकला

लुगाई नअ मुसाणा मअ लेग्यो

मोटचार:- लुगाई नअ घुमाबा बेई मुसाणा मअ लेग्यो।

लुगाई:- बोली अजी थे मन कोड़अ लेर आया छ।

मोटचार:- अरअ बावळी अण्डअ आबा बेई तो लोग-बाग मरअ छ।

दस रफ्या की मूफळयां मअ कांईं भण्डारो करुं

छोरी- छोरा नअ बोली कांईं करर्यो छ?

छोरो- मूफळयां खार्यो छूं।

छोरी- अकेलो-अकेलो ई खार्यो छ कांईं?

छोरो- पटेलण दस रफ्या की मूफळयां मअ कांईं भण्डारो करुं।

ढुंढाड़ी भासा मअ लोग-गीत

चीलगाडी आगी रे

भाया चीलगाडी आगी रे।

चूलो बळतो छोड बीनणी देखण भागी रे॥(टेर)

आछ्यो ल्यायो बीनणी, बिरथा खरचअ दाम।

या तो नागा मअली नागी रे॥

चूलो बळतो छोड बीनणी देखण भागी रे.....॥(1)

ले बेवड़ो पाणी नअ चाली, घर नअ खुल्लो छोड।

मांग्यो कूद पड़्यो कुवा मअ, या नेज छोड घरां नअ आगी रे॥

चूलो बळतो छोड बीनणी देखण भागी रे.....॥(2)

सांझ पड़्यां की रोटी पोई, या लूण साग मअ भूली रे।

आधो चून गण्डकड़ा खाग्या, या रोटी सात, एकली खागी रे॥

चूलो बळतो छोड बीनणी देखण भागी रे.....॥(3)

मदत करबाळा:-

मुकेश कुमार योगी, रतन लाल योगी

अर कविता योगी

लखबाळा

रामजी लाल बैरवा

पूरण मल बैरवा

बजरंग लाल बैरवा

ढुँढाड़ी केलेण्डर-2018 का किया विमोचन

चाकसू। ढुँढाड़ी केलेण्डर-2018 का विमोचन उपखण्ड अधिकारी रणजीत सिंह गोधारा की अध्यक्षता में किया गया। उपखण्ड अधिकारी महोदय ने बताया कि निर्माण संस्था, राजस्थान में बोली जाने वाली विभिन्न बोलियों को संरक्षित एवं मातृ भाषा में साहित्य विकास, साक्षरता कार्यक्रम व एक सुदृढ़ विकसित समाज का निर्माण करने के लिए निरन्तर समाज के लोगों को प्रेरित कर रही है। निर्माण संस्था राजस्थान की मेवाड़ी, ढुँढाड़ी, शेखावाटी, हाड़ौती, बागड़ी, मारवाड़ी, मेवाती, ओड राजपूत, बृज भाषा व वागड़ी सहित कुल दस भाषाओं पर कार्य कर रही है। संस्था इन क्षेत्रिय भाषाओं में गांव-गांव जाकर सम्बधित भाषाओं में कहानियाँ, कहावतें, मुहावरे, पहेलियां, चुटकले, सूविचार, दोहे, भजन, लोगगीत, नजब, धमाल, इत्यादी को संग्रहण कर समस्त भाषाओं में वर्णमाला चार्ट, गिनती चार्ट, वर्णमाला पुस्तकें एवं प्रोढ़ शिक्षा पुस्तके, शब्दकोष, त्रैमासिक पत्रिकायें, केलेण्डर आदी का प्रकाशन कर लोगों तक पहुंचाकर उनको भाषा संस्कृति के प्रति जागरुक एवं प्रेरित कर रही है।

संस्था इसके साथ ही सरकार द्वारा चलाई जाने वाली विभिन्न योजनाओं को अपनी भाषा में लिपिबद्ध कर जन.जन तक पहुँचाते हुए उनको जागरुक करती है। समारोह की अध्यक्षता कर रहे उपखण्ड अधिकारी गोधरा ने बताया कि अपनी मातृभाषा ही हमारी सबसे बड़ी पहचान है। जिसके द्वारा ही हमारा मानसिक विकास सम्भव है। कार्यक्रम के दौरान खण्ड शिक्षा अधिकारी महेश कुमार शर्मा, नगरपालिका चैयरमेन अनिता गुर्जर, थाना प्रभारी राजेश कुमार, विभिन्नक विभागों एवं विद्यालयों से आये हुए पदाधिकारीगण, शिक्षकगण एवं छात्र-छात्रायें तथा ढुँढाड़ी भाषा सयोंजक पूरण मल बैरवा, रामजी लाल बैरवा एवं बजरंग लाल बैरवा मौजूद थे।

जीं आदमी मअ बुद्दी कोनअ, ऊंकअ बेई तो कादा को ढेर, भाटा अर सोनो सबळा अगसार हअ छ। – श्री मद्भगवद् गीता

मलबा की ठोर

निरमाण सोसाइटी

वाड नंमर 6, तकिया मज्जिद कअ सांकड़अ,

काळी हवेली कअ पाछअ, देसवाळयां को मोल्लो,

चाड़सू, जेपर, रास्तान-303901,

फोन नं. - 01429-243997, 9982668204

Email- rajasthanlanguages@nirmaan.org.in

Web- www.nirmaan.org.in